NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

अधिक आय हेतु–भेड़ पालन

डा0 विजय चन्द्रा', डा0डी0पी0सिंह'', डा0 शिवपूजन यादव''' एवं डा0सत्येन्द्र कुमार''''

परिचय:

भारत में सूखे स्थानों तथा पहाडी स्थानों पर भेड़ पालन बहुतायत में होता है तथा भेड़ पालन से मुख्यतः ऊन, मांस, दूध एवं खाद प्राप्त होती है जिससे गड़रिये इन उत्पादों को बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। भारत में भेड़ों की संख्या वर्ष 2019 में 74. 26 मिलियन है तथा इसका विश्व में सातवॉ स्थान है।

भेड़ों से करीब 43 से 46 मिलियिन कि.ग्रा. ऊन उत्पादन प्रतिवर्ष होता है तथा ऊन से बने उत्पादों की बिक्री से लगभग रू. 3168 लाख रुपये की वार्षिक आय होती है। देश के कुल मांस उत्पादन में भेड़ के मांस की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत है तथा विदेशों में निर्यात किए जाने वाले मांस में इसकी 9 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसके अतिरिक्त भेड़ की खाल से चमड़ा तथा चमड़े से बने उत्पाद को विदेशों में बेचने से देश की आय होती है।

देश के पशुपालकों में भेड़ पालक सबसे निर्धन पशुपालक समझे जाते हैं तथा उनकी आजीविका का एकमात्र साधन भेड़ पालन ही है। भेड़ पालन के आर्थिक महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने भेड़ों के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं बनायी है जैसे विभिन्न जलवायु के लिए ऊन पैदा करने वाली नयी प्रजातियों का विकास जो प्रतिवर्ष लगभग 2.5 कि.ग्रा. ऊन उत्पादन कर सके तथा मांस उत्पादन हेतु नयी प्रजातियां जो छः माह की आयु में लगभग 30 कि.ग्रा. शरीर भार धारण कर सकें।

पालन पक्ष

भेड़ पालन के लाभ

1) भेड़ पालन में प्रारंभिक खर्च बहुत कम आता है जैसे कि आवास बनाने तथा मजदूर खर्च दूसरे पशुपालन की अपेक्षा कम।
2) भेड़ पालन शुरु करने के लिए भेड़ दूसरे पशुओं की अपेक्षा कम मूल्य पर उपलब्ध तथा अधिक प्रजनन क्षमता के कारण संख्या में तेजी से वृद्धि।
3) भेड़ सस्ते आहार/घास को कीमती उत्पादों जैसे मांस व ऊन में परिवर्तित करती है।
4) भेड़ विभिन्न प्रकार के पेड़/झाड़ियां इत्यादि खा सकती है, अतः यह खरपतवार को नष्ट करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।
5) बकरियों के विपरीत भेड़ पेड़ों को हानि नहीं पहुंचाती हैं।
6) भेड़ से भेड़ पालक को तीन उत्पाद ऊन, मांस तथा खाद एक साथ मिलते हैं।

डा0 विजय चन्द्रा', डा0डी0पी0सिंह'', डा0 शिवपूजन यादव''' एवं डा0सत्येन्द्र कुमार''''
'वरिष्ठ वैज्ञानिक(पशु विज्ञान), ''वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष,
'''वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान), ''''वैज्ञानिक(पादप अनुवांशिकी)
कृषि विज्ञान केन्द्र – महराजगंज।
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या

7) भेड़ के होठों की बनावट इस तरह की होती है, जिससे कि वह खेतों में कटाई के समय बर्बाद हुए छोटे दानों को भी खा सकती है तथा उनको लाभदायक उत्पादों में परिवर्तित कर देती है।
8) भेड़ के मांस को सभी धर्मों व समुदाय के लोग पसंद करते हैं।

भारतीय भेड़ की नस्लें

1. दूध हेतु उपयोग में लाई जाने वालीः– कोही, कूका, गुरेज और मुरेज।
2. मॉस हेतु उपयोग में लाई जाने वालीः– हसन, नैल्लोर, जालौनी, मांड्या, शाहवादी और बजीरी।
3. ऊन हेतु उपयोग में लाई जानी वालीः–बीकनेरी, बैलारी, चोकला, जालौनी, भाकरवाल, मागरा, काठियाबाड़ी, मारवाड़ी, भादरवाल, मालपुर और, दक्कनी।

भेड़ फार्म की प्रबन्ध व्यवस्था

भेड़ पालन को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ बनाने तथा अधिक लाभ लेने के लिए आधुनिक एवं वैज्ञानिक विधि अपनानी चाहिए। इस व्यवसाय से संबधित क्रियाकलाप जिनका उचित प्रबंध करना आवश्यक है।

पशुओं का चुनाव एवं उनकी खरीद

1. यह आवश्यक है कि भेड़ की उस प्रजाति का ही चुनाव करें जो क्षेत्र के लिये उपयुक्त हो तथा वहां पर उसकी उपलब्धता भी हो।
2. संकर प्रजाति की भेड़ जिनका ऊन उत्पादन अच्छा होता है, राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार के भेड़ फार्मों पर उपलब्ध है।
3. मादा भेड़ को किसी विश्वसनीय भेड़ पालक अथवा पशु मेले से खरीद सकते है तथा नर मेढ़ा (संकर अथवा विदेशी नस्ल) सरकारी फार्म से ही खरीदें।
4. भेड़े खरीदने के लिए बैंक अधिकारी तथा पशुचिकित्सक की सहायता ली जा सकती है।
5. केवल स्वस्थ पशु जो 12–18 माह की आयु के हों, उन्हें ही खरीदें।
6. पशुचिकित्सक से भेड़ों की उम्र तथा उनके स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र ले लेना चाहिए।
7. खरीदे गये पशुओं को तुरंत चिन्हित (कान में टैग लगाकर) कर देना चाहिये।
8. खरीदे गये पशुओं को रोग से बचाव के टीके लगवाने चाहिए।
9. भेड़ की कीमत उसकी नस्ल, उम्र तथा स्वास्थ्य पर निर्भर करनी चाहिए।

गाभिन भेड़ की देखरेख

गाभिन भेड़ बच्चा देते समय तथा दूध देने वाली भेड़ के उचित प्रबन्धन पर ही निर्भर करता है कि पैदा हुये बच्चों में से बाद में कितने जीवित रहे, इसलिये गाभिन भेड़ के उचित प्रबन्धन के लिये निम्न उपाय अपनाने चाहियेः

1. गाभिन भेड़ को बार–बार न पकड़ें।
2. गर्भकाल के अन्तिम दिनों में भेड़ को दूसरी भेडों से अलग करके आहार का उचित प्रबन्धन करें।
3. गर्भकाल के अन्तिम 3–4 सप्ताह में भेड़ को अतिरिक्त आहार काफी लाभदायक होता है, जिससे बच्चा देने

के पश्चात् भेड़ ज्यादा दूध देती है जिससे बच्चे की वृद्धि ज्यादा होती है।

4. कम और खराब गुणवत्ता का आहार देने से भेड़ में प्रेग्नॅन्सी टॉक्सिमिया, गर्भपात अथवा समय से पहले ही बच्चे का जन्म होने जैसी घटना हो सकती है।
5. बच्चा देने से लगभग 4–6 दिन पहले ही भेड़ को अलग वार्ड में रखना चाहिए तथा अधिक आराम के लिये उसके नीचे साफ, मुलायम बिछावन डालनी चाहिए।
6. भेड़ का गर्भकाल 142–150 दिन का हो सकता है, इसलिये गर्भकाल के अन्तिम समय में भेड़ का प्रबन्धन ठीक तरह से करें।

भेड़ की बच्चा देते समय देखरेख

जब भेड़ बच्चा देने वाली होती है तो वह बाकी झुंड से अलग हो जाती है। भेड़ बेचैन हो जाती है, अयन आकार में बढ़ जाता है, तथा बाहरी जनन अंगों में भी परिवर्तन आ जाता है। वैसे तो स्वस्थ भेड़ में बच्चा देने की प्रक्रिया सामान्य रूप से होती है, लेकिन फिर भी कुछ सावधानियों की आवश्यकता इस समय पड़ती है:

1. ध्यान रखना चाहिए कि कहीं बच्चेदानी में बच्चा तो नहीं फंस गया है। पहली बार बच्चा देने वाली भेड़ यदि कमजोर है अथवा उसे किसी बड़े आकार वाले मेढ़े से गाभिन कराया गया है तो उसे बच्चा देते समय परेशानी हो सकती है, उस समय भेड़ की सहायता करनी चाहिए। यदि बच्चा नहीं निकल पा रहा है तो पशुचिकित्सक अथवा किसी प्रशिक्षित/अनुभवी व्यक्ति से सहायता लें।
2. नवजात शिशु को भेड़ चाटती है तथा कुछ समय बाद ही बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होकर थनों को ढूंढकर दूध पीना शुरू कर देता है। अगर किसी वजह से ऐसा नहीं हो पा रहा हो तो बच्चे को पहला दूध (खीस) पीने में मदद करनी चाहिए, क्योंकि खीस पीना बच्चे के स्वस्थ रहने के लिये अति आवश्यक है।
3. नवजात बच्चे को ठंड, वर्षा तथा तेज आंधी से बचाना चाहिये।
4. जिन बच्चों की माँ की मृत्यु हो गयी हो, उनको कृत्रिम दूध पिलाना चाहिये अथवा दूसरी ताजी ब्यायी भेड़ जिसके बच्चे मर गये हों और कभी–कभी ताजी ब्यायी बकरी का दूध भी पिला सकते है।
5. बच्चे की नाल को धागे से बांधकर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
6. बच्चे को एक चम्मच अरंडी का तेल अथवा लिक्विड पैराफीन पिलाना चाहिए, जिससे बच्चे की आंत से म्यूकोनियम (पहला पाखाना) ठीक तरह से साफ हो जाये।
7. शुरू में बच्चे को बार–बार नहीं पकड़ना चाहिए, माँ को उसे चाटने देना चाहिए जिससे वह उसे पहचानने लगे।
8. शुरू के कुछ सप्ताह तक बच्चे को 24 घन्टे माँ के साथ रहने देना चाहिए।

9. दूध देने के समय से भेड़ को अच्छी किस्म का आहार (हे) तथा राशन खिलाना चाहिए।
10. पीने का स्वच्छ पानी हमेशा उपलब्ध रहना चाहिए, क्योंकि दूध देने वाली भेड़ ज्यादा मात्रा में पानी पीती है।

मेमने की देखरेख

मेमनों को प्रारंभिक समय में काफी देखरेख की जरूरत है जिससे उनमें मृत्यु दर कम से कम हो। मेमनों की दृद्धि ठीक हो तथा मृत्यु कम हो इसके लिये निम्न प्रबन्ध जरूरी है:

1. भेड़ के अयन तथा थनों का ठीक से परीक्षण कर लें कि कहीं उनके सूराख बन्द तो नहीं हैं या थनैला तो नहीं है तथा यह देख लें कि बच्चे ने ठीक से दूध पिया है अथवा नहीं।
2. जो भेड़ बच्चे को दूध नहीं पीने दे रही है उसे ठीक तरह से बांधकर बच्चे को दूध पिलायें।
3. बच्चे को दूध के साथ–साथ 10 दिन की आयु से दूध छोड़ने तक अच्छी गुणवत्ता की सूखी घास तथा कुछ मात्रा में राशन भी उपलब्ध करायें। इस समय पर बच्चों को हरी पत्तेदार घास तथा पेड़ों की ताजी पत्तियां भी दी जा सकती है।
4. बच्चे को चिह्नित (कान में टैग अथवा टैटोइंग) कर देना चाहिए।
5. पहले सप्ताह में ही बच्चे की पूंछ काट देनी चाहिए तथा उसे बधिया कर देना चाहिए।

मेमनों की दूध छुड़ाने (वीनिंग) के बाद देखरेख

1. बच्चे की वीनिंग 10 दिन की आयु पर करनी चाहिए, लेकिन जिन प्रजातियों में दूध की मात्रा कम होती हो तथा जहां पर भेड़ से फिर जल्दी ही बच्चा लेना है, वहां वीनिंग 6 दिन पर भी की जा सकती है।
2. अच्छी शरीर वृद्धि के लिये उसे अतिरिक्त आहार तथा चारागाह में चराना चाहिए।
3. एक माह की उम्र पर मेमनों को पेट–आंत के कीड़ों (कृमि) को मारने की दवाई पिलायें तथा एन्टीरो–टॉक्सिमिया एवं पॉक्स रोग से बचाव के टीके लगवाने चाहिए।
4. मेमनों को कांटेदार चारागाह पर न चरायें, क्योंकि उससे उनके आंख शरीर आदि में घाव हो सकता है तथा ऊन भी खराब हो सकती है।
5. मेमनों को कुत्तों तथा अन्य जंगली जानवरों से बचाना चाहिए।

आवास प्रबंधन

भेड़ को आवास की आवश्यकता नहीं होती लेकिन कम से कम सुविधा उपलब्ध कराने पर निश्चित ही उत्पादन में वृद्धि होती है, क्योंकि इससे मौसम के खराब होते की स्थिति में तथा जंगली जानवरों से भेड़ का बचाव होगा। भेड़ का बाड़ा बोरी अथवा बांस एवं घास–फूस ने बनाया जा सकता है, जिसको कभी भी हटाया जा सकता है अथवा ऐस्बेस्टॅस की छत को स्टील/लकड़ी के डंडों के सहारे रखकर भी बाड़ा बनाया जा सकता है। विदेशी नस्ल की भेड़ों के लिये 0.9–1.1 वर्ग मी. तथा देशी एवं संकर प्रजातियों के लिये 0.8–0.9 वर्ग मी. प्रति पशु की

आवश्यकता होती है। 16 मी. ग 6 मी. के बाड़े में लगभग 120 भेड़ रखी जा सकती हैं। रात के समय भेड़ों के चारों ओर लोहे की जंजीर अथवा कांटेदार झाड़ियों से बाड़ लगानी चाहिए।

ऊन उत्पादन के लिये आहारः–

चूँकि ऊन स्वतः शुद्ध प्रोटीन है, अतः इसके उत्पादन के लिए काफी मात्रा में भेड़ को प्रोटीन युक्त राशन खिलाना परम आवश्यक है। यदि भेड़ को दिए जाने वाले आहार में प्रोटीन अथवा कार्बोहाइड्रेट की कमी है तो उस भेड़ की ऊन निम्न कोटि की होगी। अतः एक स्वस्थ भेड़ को निर्वाह एवं ऊन उत्पादन के लिए 1.5 किलो शुष्क पदार्थ, 0.8 किलो स्टार्च तुल्याँक तथा 0.12 किलो पाचक प्रोटीन नित्य मिलना चाहिए। चूँकि ऊन की प्रोटीन में गन्धक युक्त ऐमीनो–अम्ल अधिक होते हैं, अतः अच्छी किस्म की ऊन लेने के लिए भेड़ को राशन में गन्धकयुक्त ऐमीनो–अम्ल, जैसे–'सिस्टीन' या गन्धक मिलकर खिलाना चाहिए।

छंटनी

फार्म पर उत्पादकता बनाये रखने हेतु अनुत्पादक भेड़ों की छंटनी बहुत आवश्यक है, जिससे उन्हीं भेड़ों से प्रजनन कराया जा सके जो प्रत्येक दृष्टि से उचित है। प्रत्येक वर्ष 10–20 प्रतिशत भेड़ों की छंटनी करनी चाहिए तथा छंटनी की गयी भेड़ों की जगह फार्म पर पैदा हुये मादा मेमनों से पूर्ति करनी चाहिए।

रिकार्ड का रखरखाव

फार्म का आय–व्यय का विवरण ठीक–ठीक ज्ञात करने के लिये उनका रिकार्ड रखना बहुत आवश्यक है, इससे पता लगता रहेगा कि प्रत्येक पशु से कितनी लाभ अथवा हानि हो रही है तथा अधिक लाभ लेने के लिये क्या कदम उठाये गये? जिन चीजों का रिकार्ड रखना जरूरी है वे हैं–पशुओं की संख्या, प्रजनन रिकार्ड, पैदा हुए मेमने, ऊन की कटाई, ऊन का उत्पादन, मृत्यु दर, दवाइयां, राशन की खरीद, पशुओं एवं ऊन की बिक्री आदि।

भेड़ों को चिह्नित करना

भेड़ पालक सामान्यतः भेड़ों के कान पर नोचने अथवा सुराख बनाने की विधि अपनाते हैं। भेड़ों के कान पर टैग लगाकर चिन्हित करने की ज्यादा प्रयोग में आने वाली विधि है।

डिपिंग

बाह्य परजीवियों की रोकथाम के लिये भेड़ों की ऊन कटाई के कुछ सप्ताह बाद जब शरीर पर कुछ नयी ऊन आ जाये, तो भेड़ों को परजीवीनाशक पानी में डिप करना (डुबकी लगवाना) अति आवश्यक हो जाता है। इसके साथ–साथ फार्म के दरवाजे पर कीटाणुनाशक मिला पानी भरा रहना चाहिए, जिससे बाहर से आने वाला व्यक्ति पैर/जूते उसमें भिगो कर ही अन्दर आये, इस तरह से संक्रामक रोगों के फैलाव को रोका जा सकता है।

ऊन काटना

भेड़ों की ऊन, कैंची अथवा मशीन से काटी जा सकती है। जम्मू–कश्मीर तथा राजस्थान में वर्ष में तीन बार ऊन काटी जाती है तथा दूसरी जगह वर्ष में दो बार–सर्दियों की समाप्ति पर मार्च–अप्रैल में तथा बरसात के बाद सितम्बर–अक्टूबर में ऊन काटी जाती है।